B.A. part-II
subsidiary

01

61

Q-(1) कैसवहो की भाषा शैली पर प्रकाश डालें।

Ans- कैसवहो की भाषा भाव एवं शैली की दृष्टि से यह
काव्य संस्कृत से बहुत प्रभावित है। इसमें प्राकृत के
गाथा छन्द का प्रयोग नहीं हुआ है। कवि ने संस्कृत
के वंशस्थ, वसन्ततिलका, प्रहर्षिणी, इन्द्रवज्रा, उपजाति,
उपेन्द्रवज्रा, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता, मालिनी, शिखरिणी
आदि छन्दों का प्रयोग किया है। प्राकृत का अपना छन्द
गाथा है। जिसका इसमें अत्यन्त अभाव है।

कैसवहो की भाषा के सम्बन्ध में कवि डा० एन०उपाध्ये
ने इस पर बहुत विस्तार से विचार किया है। इस
काव्य की भाषा में अल्प प्राण क, ग आदि मध्यवर्ती
व्यंजनों का लोप महाप्राण ख, फ, के स्थान पर
ह का आदेश। पूर्वकालिक क्रिया का रूप ऊण प्रत्य-
यान्त। कारक के उदाहरण भी इसमें वर्तमान प्रत्यय
आदि महाराष्ट्री के लक्षण पाये जाते है। मागधी
के उदाहरण भी इसमें वर्तमान है, यहाँ अहं के
स्थान पर अहके और क्वचित र, के स्थान पर
ल- यथा कालण (कारण) गलुस (गरुण)
मुहल (मुखर) आदि पाये जाते हैं। इसी प्रकार
अनेक शब्दों के मध्य में त का लोप न
होकर द, आदेश पाया जाता है। यथा- अदिहि
२ अतिथि, तदो २ ततः वामदा २ वामता आदि

लम्भदो, करादो, सूरादो आदि शब्दों में पञ्चमी
विभक्ति में दो प्रत्यय पाया जाता है। होदु
आदि होदु जैसे रूपों में 'तु' के स्थान पर 'दु'
पाया जाता है उक्त उदाहरणों में शौरसेनी
की प्रवृत्तियाँ वर्तमान है। इस प्रकार इस
काव्य में महाराष्ट्री शौरसेनी और मागधी

OPPO A53 • ©ADITYA
2021/06/29 16:59

इन तीनों भाषाओं के प्रयोग वर्तमान है। यद्यपि महाराष्ट्रीय कोई स्वतन्त्र प्राकृत नहीं है, यह शौरसेनी की ही प्रवृत्ति है: तो इन भाषा की दृष्टि से

इन काव्य को व्याकरण सम्मत कहा जाता है। सबहो भाषा शौरसेनी मे इस सं. के उपायों का बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहा है। जो भाषा को सटीक रूप से विस्तार किया है।

OPPO A53 · ©ADITYA
2021/06/29 16:59